CLIL@India
Language Learning Redefined

CLIL Newsreel

Co-funded by the Erasmus+ Programme of the European Union

April 24, 2018 Volume 2, Issue 1

From the Editor's Desk

हमारी मातृभाषा हमारी धरोहर

बच्चे के सामाजीकरण में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और अपने परिवार व आस पास के लोगों से सूचना, निर्देश, आदेश एवं संकेत जिस रूप में वह प्राप्त करता है उसमें भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिस भाषा को वह अपने जन्म से सुनता है, अनुकरण करता है उसमें दिए गए निर्देशों को वह अर्थग्रहण कर समझता है। इस प्रकार मातृभाषा में वह न केवल स्वयं को अभिव्यक्त कर पाता है बल्कि समालोचनात्मक सोच विकसित कर नवीन सृजन भी कर पाता है।

पूरे विश्व में 40 प्रतिशत लोग जिस भाषा को बोलते व समझते है वह भाषा उनके शिक्षा का माध्यम नहीं है। विद्यालय की भाषा व घर के बोलचाल की भाषा अलग होने से बालक विद्यालय में उतना मुखर नही रह पाता जितना मातृभाषा में। वह बालक वास्तव में भाग्यशाली होते है जिनके घर की एवं विद्यालय की भाषा एक होती है। उन बच्चों के माता पिता भी उनको सीखने व सिखाने में मदद कर पाते है। इसके अतिरिक्त आसपड़ोस व कुनबे के सभी सदस्यों से वह भाषा व परिवेश की बातें स्वाभाविक रूप से सीख जाता है।

चॉमस्की कहते है "बच्चों में भाषा को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। इसी क्षमता के कारण बच्चा 4–5 वर्ष की उम्र तक अपने परिवेश की भाषा में सुनने, सुनकर अर्थ ग्रहण करने, बोलने, अर्थपूर्ण बोलने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।" मारिया मॉन्टेसरी के अनुसार "बच्चा अपने आप अपने माता पिता की भाषा सीख लेता है परन्तु हम वयस्कों ; ।कनसजद्ध के लिए भाषा सीखना बहुत बड़ी भौतिक उपलब्धि होती है। बच्चे को कोई सीखाता नहीं परंतु वह संज्ञा, क्रिया, सर्वनाम, विशेषण आदि का बिल्कुल सही प्रयोग कर लेता है।"

> बच्चे से एकदम शुरूआत से ही विद्यालय की भाषा में बोलने का दबाव बच्चे के बोलने के अवसरों को सीमित कर देता है इसका नुकसान यह होता है कि बच्चे के परिवेशीय भाषा बोली से विद्यालय की भाषा के मध्य सेतू निर्माण के अवसर खत्म हो जाते है।

ब्स्प्स्/प्दकपं प्रोजेक्ट के माध्यम से भारतीय भाषाऐं जो कि हमारी धरोहर है उनका संरक्षण एवं संवर्धन का अवसर हमें मिला है जहाँ भाषाओं के साथ साथ परिवेशीय संदर्भो एवं विषयों को विद्यार्थी अर्थग्रहण करते हुए समझ पाऐगें। बच्चे मातृभाषा से भावनात्मक रूप से मजबूती से जुड़े होते है इस प्रकार ब्स्प्स् शिक्षण पद्धति से मातृभाषा ;डवजीमत ज्वदहनमद्ध से बहुभाषिकता ;डनसजपसपदहनंसपेउद्ध की ओर हम बढ़ सकते है। भाषा शिक्षक के बहुभाषिक ज्ञान एवं विषय विशेषज्ञ शिक्षक की मदद से विद्यालयी विषयों एवं नवीन भाषा को सिखाना भारतीय संदर्भो में न केवल ज्ञानवद्ध ंक होगा बल्कि कक्षा में हर बच्चा स्वयं को स्वीकार्य व संरक्षित भी महसूस करेगा।

मैं ब्स्प्स् छमूेसमजजमतए अवसनउम.2 के लिए सभी सहयोगियों को बधाई देती हूँ एवं ब्स्प्स् चतवरमबज की पूर्ण सफलता की कामना करती हूँ।

Best wishes,

Dr Sangeeta Pant
Coordinator, CLIL@India
Chitkara University, Punjab

SYMBIOSIS INTERNATIONAL UNIVERSITY
UCLM UNIVERSIDAD DE CASTILLA-LA MANCHA
LATVIJAS UNIVERSITĀTE ANNO 1919 UNIVERSITY OF LATVIA
MANIPAL ACADEMY of HIGHER EDUCATION
UNIVERSITÀ DEGLI STUDI DI MILANO
CHITKARA UNIVERSITY
PONDICHERRY UNIVERSITY

CLIL@India celebrates International Mother-tongue day

Chitkara

Chitkara College of Education celebrated the International Mother Language Day on 21st February 2018 with a theme, "Sustainable Futures through Multilingual Education (UNESCO)". Students of B.Pharmacy, Pharma D, CSE and B.Ed, who belong to different states like Bihar, Haryana, Punjab, Nagaland, Kerala, Mizoram, Jharkhand and Himachal Pradesh participated in various activities conducted by Alpha Teachers with a motive to promote awareness of linguistic and cultural diversity of Indian states.

The activities ranged from paragraph writing, singing a song, writing idioms and phrases to introducing oneself in their native language. Students also expressed their views in their own mother tongue which was a wonderful opportunity for the others to know about different languages, cultures and diversities.

Manipal

CLIL@India Resource and Training Centre at MAHE, Manipal celebrated mother-tongue day on 24 February 2018 in collaboration with the Department of European Studies, MAHE. Students and staff of the Dept of European Studies participated in large numbers and made the event a resounding success. In addition to reciting poetry in languages such as Punjabi and Kannada, there were also interesting story-telling sessions in Mewari and Tulu.

In addition to giving a nod to various literary forms, the event saw rich linguistic diversity. While the M.A. students performed songs and recited poetry, the B.A. students presented stand-up comedy and folklore. Dr Arjuna, lead researcher of the Mahabharata project at MAHE, Manipal presented a story along with Dr Deepa BS, Research Associate, CLIL@India and Prathima Kalmady, Office Manager, CLIL@India

Did you know?

- The term **CLIL** was coined in 1994 by David Marsh to create a distinct methodology that is not the same as language immersion and content-based instruction.
- Based on the methodology closely resembling "language immersion", CLIL was identified as an important approach by the European Commission since it enabled the confidence of pupils who were struggling to respond well to regular language instruction in class.
- There are very many objectives to CLIL but the most significant one is to improve the educational system and create a space wherein students are motivated to achieve the appropriate level of academic performance in CLIL subjects
- CLIL is not the same as traditional foreign language teaching courses. However, debate continues about the extent to which immersion, Content Based Language Teaching (CBLT)

Upcoming Events

Chitkara University, Punjab will be hosting the **Second Open CLIL Intensive Training Workshop** titled **Boot Camp-Seasoning to Enhance Teaching Learning Experience** from **24th to 28th April, 2018.** This five-day International Training Programme will provide quintessential in-depth know-how on significant CLIL-related topics and take the discussion forward. **Dr. Luciana Pedrazzini and Dr Andrea Nava,** CLIL experts and Assistant Professors, Department of Foreign Languages and Literature, Universita Delgli Studi Di, Milano will be present at the workshop to provide their valuable insights.